Dr.Raman Kumar Thakur
Assistant professor (Guest)
Department of Economics
D.B.College, jaynagar,Madhubani.
L.N.M.U.Darbhanga.

B.A part-1(Hons)
Date:- 13 May 2020

Topic:- "भारत का विदेशी व्यापार"
(THE FOREIGN TRADE OF INDIA)

:- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विकासशील अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के लिए व्यापार के औपनिवेशिक ढांचे को बदलना अनिवार्य था । जो भी अर्थव्यवस्था विकास प्रोग्राम को कार्यान्वित करने का निर्णय करती है ,उसे अपनी उत्पादन क्षमता (Productive Capacity) को तेजी से बढ़ाना पड़ता है। इस कारण विकास की आरंभिक अवस्थाओं में मशीनरी, तथा अन्य सामान जो देश में बनाया नहीं जा सकता, का आयात करना पड़ता है ।ऐसे आयात जो उत्पादन के कुछ क्षेत्रों में नई क्षमता स्थापित करते हैं या उत्पादन के अन्य क्षेत्रों में क्षमता का विस्तार करते हैं वह विकासात्मक आयात(Developmental imports)कहलाते हैं।

नियोजन काल में भारत के विदेशी व्यापार के गठन में संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं निर्यात में गैर-परंपरागत वस्तुओं का प्रतिशत निरंतर बढ़ा है। रसायनों व इंजीनियरिंग वस्तुओं के निर्यातो में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है ।दस्तकारी का सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा सॉफ्टवेयर विगत वर्षों में निर्यात की सबसे प्रमुख वस्तुओं के रूप में उभरी है। दिशानुसार भारत का सर्वाधिक विदेशी व्यापार संयुक्त राज्य अमेरिका से है यद्यपि कुछ दिनों से इसमें कमी आई है ।

* स्वतंत्रता के बाद भारत का विदेशी व्यापार:-
स्वतंत्रता उपरांत काल में भारत के विदेशी व्यापार का अध्ययन करने के लिए इस समय अवधि को इस प्रकार विभक्त कर देखा जा सकता है :-

1) युद्ध काल में अवरुद्ध मांग और युद्ध उपरांत काल में लगाए गए विभिन्न नियंत्रण एवं प्रतिबंधों के परिणाम स्वरूप आयात में वृद्धि।

2) विभाजन के फलस्वरुप खाद्य तथा मूल कच्चे मालों पटसन और रूई की दुर्लभता के कारण आयात में वृद्धि ।

3) प्रतिस्थापन और विकास परियोजनाओं की आवश्यकताओं की दृष्टि से मशीनरी तथा अन्य सामान के आयात में वृद्धि।

* प्रथम योजना काल में विदेशी व्यापार:-
इस काल में आयात का औसत वार्षिक मूल्य 730 करोड रुपए था और निर्यात का 622 करोड़ रुपए था।

इस प्रकार औसत वार्षिक व्यापार घाटा 108 करोड रुपए था व्यापार के घाटे का मुख्य कारण जो इस काल में गति प्राप्त कर गए थे तथा पुंजी वस्तुओं के आयात में वृद्धि हुआ था। कुल आयात के प्रतिशत रूप में कच्चे मालों के आयात में कुछ कमी हुई लेकिन निर्यात में कोई उन्नति नहीं हुई थी।